क्या होगा चुनाव में

आने वाले चंद महीनों में फैसला हो जाएगा। क्या होगा, ये बड़ा सवाल है। कांग्रेस आएगी नहीं और ऐसा लगता नहीं कि भाजपा बहुमत हासिल करेगी। 'आप' ने राजनीति की नई इबारत लिख दी है, पर राष्ट्रीय फलक पर उभरने में उसे वक्त लगेगा। फ़िर क्या होगा? अनिश्चितता की स्थिति है। एक अनिश्चितता और संशय के माहौल में है देश। आर्थिक-राजनीतिक संकट गहरा रहा है। जनता के सामने कोई ठोस विकल्प नहीं उभर पा रहा।

मनोज कुमार झा

इस साल होने वाले आम चुनाव में एक बात तो तय है कि कांग्रेस का सफ़ाया होने जा रहा है। पार्टी नेतृत्व का आत्मविश्वास हिल चुका है। फ़िर भी न जाने किस उम्मीद में राहुल गांधी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित करने की तैयारी चल रही है। वंशवादी कांग्रेस से और कोई दूसरी उम्मीद भी नहीं की जा सकती थी। कहा जा रहा है कि राहुल गांधी के 'छवि निर्माण' के लिए 500 करोड़ रुपये खर्च किये जा रहे हैं। बहरहाल, राहुल ने अपनी जो छवि बनाई है, वह जनता क्या, कांग्रेस नेताओं को भी आश्वस्त करने वाली नहीं है। कांग्रेसी मंत्री जयराम रमेश ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि 'आप' के अभ्युदय ने सभी पार्टियों के लिए एक चुनौती पेश की है और सभी दलों के सामने ख़तरा मंडरा रहा है। 'आप' ने यह दिखाया है कि अब पुराने ढर्रे वाली राजनीति नहीं चल पाएगी। उसने जनाकांक्षाओं को नया स्वर दिया है। यह अलग बात है कि विचारधारात्मक ऊहापोह और संगठनात्मक ढांचे के अभाव में वह किस हद तक सफल हो पाएगी। कहना मुश्किल है।

कांग्रेस, भाजपा, जद (यू), समाजवादी पाटी, बसपा और भ्रष्टाचार के दलदल में डूबे तमाम दल 'आप' के कट्टर विरोधी हैं। दूसरी तरफ, कुछ भ्रष्ट अवसरवादी तत्व मौका देखकर 'आप' में सेंघ लगाने की तैयारी में भी हैं।

'आप' ने लोकसभा की सभी सीटों से चुनाव लड़ने का फ़ैसला किया है। युवावर्ग, वोटरों में जिसकी संख्या सबसे ज़्यादा है, स्वाभाविक रूप से 'आप' का समर्थन करेंगे, पर इस नवगठित दल के साथ समस्या यह है कि इसका अखिल भारतीय क्या, एक क्षेत्रीय ढांचा भी अभी विकसित नहीं हो पाया है और लोकसभा चुनावों की तैयारी के लिए समय बहुत कम है।

भ्रष्टाचार के पंक में गले तक डूबे दलों के लिए 'आप' का उपहास उड़ाना और उसे पानी का बुलबुला समझना स्वाभाविक है, पर अपने-आप को परिवर्तनकामी राजनीति का एकमात्र प्रवक्ता घोषित करने वाले वामपंथियों की इस मामले में चुप्पी उनके व्यवस्था समर्थक चरित्र को ही उजागर करती है। साथ ही उन 'क्रांतिकारी' मार्क्सवादी गुटों का क्या कहना जो व्यावहारिक राजनीति से कोसों दूर रहे और सिद्धांतों की जुगाली में ही सारा समय व्यतीत करते रहे। इनमें भी 'आप' के अभ्युदय की परिघटना को समझने के प्रयास की जगह, इसके प्रति उपेक्षा का भाव ही दिखाई पड़ता है।

चार विधानसभा चुनावों के परिणामों को देखते हुए इस बात में दो राय नहीं कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को भारी शिकस्त मिलेगी। कांग्रेस नेतृत्व इस बात को भली-भांति समझते हुए भी स्वीकार करने को तैयार नहीं है। उसे किसी चमत्कार की उम्मीद है। राहुल पूरी तरह फेल हो चुके हैं। यूपी में इतनी नौटकी की, वहां भी फेल हुए। जनता उन्हें सुनना नहीं चाहती। उन्हें देखकर सभा छोड़ भागने लगती है। राहुल के व्यक्तित्व से बचपना अभी गया नहीं है। वो तो राहुल बाबा हैं। ढंग से भाषण तक नहीं दे पाते कांग्रेस इन्हें प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार घोषित कर देगी, पर देश इन्हें प्रधानमंत्री के रूप में हर्गिज स्वीकार नहीं कर सकता। इनकी हर बात से, हर कदम से बचकानापन झलकता है। इसीलिए इनकी मदद को प्रियंका को लाने की तैयारी चल रही है। प्रियंका यही करेंगी कि कुछ भीड़ बटोरेंगी, पर क्या वोट भी बटोर पाएंगी? हर्गिज नहीं। देश की जनता कांग्रेस से उब चुकी है। त्रस्त है महंगाई से, कुशासन से, भ्रष्टाचार से, नेताओं की हरामखोरी से। कांग्रेस को जाना है, यह तय है। फ़िर आना किसे है, ये बड़ा अहम सवाल है। नरेंद्र मोदी नए नेता के रूप में उभरने की पूरी तैयारी में हैं। जहां भी जाते हैं, लाखों की भीड़ उमड़ती है। ये अपनी तरह से छवि-निर्माण का प्रयास कर रहे हैं। 'चाय बेचने वाले' के रूप में अपने-आप को प्रचारित कर रहे हैं, पर गरीब देश का नेता 200 करोड़ रुपए से बने हाईटेक ऑफिस में नहीं रहता। मोदी भारतीय जनता पार्टी की आखिरी उम्मीद हैं। खून से रंगे हैं इनके हाथ। अदालत ने इन्हें क्लीन चिट दे दिया, पर इससे क्या। सवाल है, क्या देश गुजरात दंगों को भूल सकता है? नरोदा पाटिया को भूल सकता है? मोदी बहुरूपिया हैं। मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भाजपा की जीत के पीछे 'मोदी फैक्टर' का असर कितना रहा, इसका आकलन किया जाना शेष है। सवाल है, दिल्ली में 'मोदी फैक्टर' काम क्यों नहीं कर पाया?

मोदी को देश के पूंजीपतियों और कॉरपोरेट घरानों का समर्थन प्राप्त है, पर अंबानी जहां मोदी का समर्थन करते हैं, वहीं कांग्रेस का भी। मोदी को बाबा रामदेव का भी समर्थन प्राप्त है जिनकी औकात दो कौड़ी की नहीं रही और जनता जिनके दोरंगे चरित्र को भली-भांति समझ चुकी है। ये सारे टैक्स खत्म करने की बात करते हैं। समझा जा सकता है, उन्हें राज व्यवस्था और अर्थव्यवस्था की कितनी समझ है। मोदी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसें प्रतिगामी संगठन के उम्मीदवार हैं जिसके प्रमुख कहते हैं कि भारत में रहने वाला हर व्यक्ति हिंदू है। ये हिंदुस्तान को 'हिंदुस्थान' कहते हैं। क्या ऐसे कलुषित चरित्र के लोगों को देश की जनता स्वीकार करेगी?

भाजपा कांग्रेस के भ्रष्टाचार को मुद्दा बना रही है, पर जिनके घर शीशे के बने हुए हों, वे दूसरों पर पत्थर कैसे उछाल सकते हैं। भाजपा के भ्रष्टाचार की कथा अनंत है। जिस येदियुरप्पा ने भ्रष्टाचार के क्षेत्र में नये कीर्तिमान स्थापित किए थे, उसके आगे भाजपा ने फ़िर से घुटने टेक दिये। चंद नेताओं को छोड़ दिया जाए तो अधिकांश भाजपाइयों के हाथ रिश्वत के पैसे से लाल हैं। ये किस दम पर कांग्रेस को भ्रष्ट बता जनता को अपने पक्ष में करेंगे।

दक्षिण में, जयललिता जैसी भ्रष्ट और अवसरवादी भाजपा के साथ आने को तैयार दीखती है, पर इनका कोई स्पष्ट वैचारिक आधार नहीं है। केंद्र में जिसका पलड़ा भारी देखते हैं, उधर ही जाते हैं ये, चाहे जयललिता हों या करूणानिधि। ये क्षत्रप हैं और इनके क्षेत्र में न भाजपा की दाल गलती है, न कांग्रेस की।

जहां तक बिहार, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल की बात है, वहां मोदी और भाजपा का प्रभाव कितना होगा, ये देखने वाली बात है। मदारी जब डुगड़गी बजाता है तो राह चलते लोग एकबारगी रूक कर कुछ देर के लिए तमाशा देख ही लेते हैं। इन राज्यों में मोदी का प्रभाव कहीं मदारी वाला ही न हो। मजमेबाज तो हैं ही मोदी। देश के इतिहास-भूगोल का कितना ज्ञान रखते हैं, ये तो लोगों ने देख ही लिया। सुनते हैं, इन्होंने कई जगहों पर चाय के फ्री स्टाल लगवाए हैं। चाय बेचते थे, ये इनके लिए गौरव की बात है और गुजरात में भूखे लोग जिस्म बेच रहे हैं, ये कैसी बात है। चाय पिला-पिला कर लोग़ों को पानी पिलाएंगे मोदी।

बहरहाल, आने वाले चंद महीनों में फैसला हो जाएगा। क्या होगा, ये बड़ा सवाल है। कांग्रेस आएगी नहीं और ऐसा लगता नहीं कि भाजपा बहुमत हासिल करेगी। 'आप' ने राजनीति की नई इबारत लिख दी है, पर राष्ट्रीय फलक पर उभरने में उसे वक्त लगेगा। फ़िर क्या होगा? अनिश्चितता की स्थिति है। एक अनिश्चितता और संशय के माहौल में है देश। आर्थिक-राजनीतिक संकट गहरा रहा है। जनता के सामने कोई ठोस विकल्प नहीं उभर पा रहा।

माल्थस का भूत

बरसों पहले एक महत्त्वपूर्ण कांग्रेसी नेता जगप्रवेश चंद्र ने मजाक करते हुए मदनलाल खुराना से कहा कि लोग खुले दिमाग से सोचने के बजाया खुले मुंह से सोचते हैं। प्रतिद्वंद्वी पार्टी से जुड़े होने के बावजूद दोनों दोस्त थे। पिछले दिनों मुलायम सिंह यादव और शरद यादव की देश में जनसंख्या नियंत्रित करने की मांग को देखते हुए, कोई भी यह कह सकता है कि दोनों अपना दिमाग इस्तेमाल करने के बज़ाय अपने बड़बोलेपन पर निर्भर रहे हैं। उन्हें जनसंख्या वृद्धि और उससे जुड़े विवादों की जानकारी हासिल करनी चाहिये।

फ्रांसीसी क्रांति के बाद से ही यह बहस लगातार जारी है। कोदोरसेट, विलियम गुडविन, माल्थस, मार्क्स और रोम क्लब के बाद से यह बहस निरंतर जारी है कि क्या जनसंख्या वृद्धि दर का आर्थिक वृद्धि दर के साथ कोई अनौपचारिक सम्बंध है। भारत का उदाहरण लें, 1931 से पहले इसकी जनसंख्या में कुछ खास वृद्धि नहीं हुई थी और उस वक्त जनसंख्या आज के मुकाबले में काफ़ी कम थी, फ़िर भी उस वक्त आज के मुकाबले ज़्यादा गरीबी थी। माल्थस का प्रादुर्भाव प्रांसीसी क्रांति की काट करने के लिये हुआ था। उसने घोषणा की कि मज़दूर वर्ग इसलिये ग़रीब है क्योंकि इस वर्ग की जनसंख्या वृद्धि दर सबसे ज़्यादा है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद उसी समय आज़ाद हुए देशों को यह बताने के लिये कि उन्हें आधुनिक अर्थव्यवस्था का निर्माण करने के बजाय अपनी जनसंख्या वृद्धि दर को नियंत्रित करने के काम को प्राथमिकता देनी चाहिये। आपातकाल के दौरान उसके अनुचरों को संजय गांधी के नेतृत्व में सक्रिय होने और अपना प्रभुत्व स्थापित करने का अवसर मिला। हालांकि आपातकाल के बाद माल्थस के भूत को निर्वासित कर दिया गया था, फ़िर भी इन दो यादवों जैसे नेता अभी भी इसके चंगुल में फंसे हुए हैं।

ज़्यादा पुरानी बात नहीं है जब दो प्रमुख हिंदूवादी नेताओं ने यह सिद्धांत दिया कि हमारे देश में जनसंख्या वृद्धि की तेज़ दर के लिये मुसलमान जिम्मेदार है, हालांकि आंकड़े उनके दावों की पुष्टि नहीं करते थे। (हिंदुत्ववादियों ने अभी हाल ही में हिन्दुओं से अधिक बच्चे पैदा करने का आहान किया है-स.)आपातकाल के दौरान, मोहित सेन के अनुरोध पर, मैंने उस वक्त एक किताब लिखी थी जिसे राजनीतिक कारणों से प्रकाशित नहीं किया गया था। 2001 में, मानक प्रकाशन ने ''माल्थस एण्ड हिज घोस्ट'' नाम से इसे प्रकाशित किया।

-गिरीश मिश्रा

तुर्की-ब-तुर्की

आजम खां
ऐय्याशी का डंकाः आजम की लंका

''मायावती को एक मुसलमान के विदेशी प्रतिनिधि-मंडल का नेता बनने से परेशानी है।''

(उत्तर प्रदेश के 9 सपा मन्त्रियों की विदेश ऐय्याशी पर एक करोड़ रुपये खर्च होने के संदर्भ में)

हमारा कहना है-

- श्री मान आजम खां आपकी परेशानी भी मुसलमान को लेकर नहीं है क्योंकि मायावती की ही तरह आपके लिये भी मुसलमान केवल वोट बैंक ही है। अगर आपको वास्तव में मुसलमान की चिन्ता होती तो आप इन ऐय्याशीपूर्ण यात्राओं पर निकलने की बज़ाय मुजफ़्फर नगर के दंगापीड़ितों की सुध ले रहे होते।
- आप जैसे मुस्लिम वोट बैंक के ठेकेदारों को मुस्लिम समुदाय की बेहतरी से शायद ही कोई लेना-देना होता हो। आज उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार में आपका दबदबा है। पर सिवाय अपने चमचों को फ़ायदा पहुंचाने और गुंडों को संरक्षण देने के अलावा आपने मुस्लिम समुदाय का क्या भला कराया है? शिक्षा और रोज़गार में वे हमेशा की तरह ही पिछड़े हुए हैं। समाज में इस समुदाय को अलग-अलग रखा जाता है। यहां तक कि इन मुद्दों पर आपकी ओर से सार्वजनिक रूप से मौखिक चिन्ता भी प्रगट नहीं की गई।
- मुसलमानों का सबसे भला तो आज के दिन आजम खां साहब आप यह कर सकते हैं कि उत्तर प्रदेश में मुलायम परिवार के गुंडाराज के खिलाफ़ आवाज उठायें और यदि आपकी खाई-अघाई जमीर इसकी इजाजत न दे तो किसी अन्य समझदार-प्रबुद्ध मुसलमान के लिये अपनी सीट खाली कर दें। कम से कम मुजफ्फ़र नगर देगों के दोषियों को बेदाग छूटने की वह सुविधा नहीं मिल पायेगी जो आपकी सरकार ने साम्प्रदायिकता भड़काने के दोषी भाजपाई वरुण गांधी को पीली भीत में तमाम सरकारी गवाह बिठा कर बरी होने में दी थी।

राज ठाकरे
महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के नेता

''मोदी हमेशा गुजरात के बारे में सोचते हैं। पूरे देश की बात करें मोदी।''

हमारा कहना है-

- मोदी भी वोट के बारे में सोचते हैं और आप भी, राज ठाकरे जी। न देशवासियों से उनका कोई लेना-देना है न आपका।
- मोदी कम से कम एक प्रदेश, गुजरात की बात तो करते हैं। आप तो पूरे महाराष्ट्र की बात भी नहीं करते। महाराष्ट्र में आपका ध्यान सिर्फ़ मराठवाड़ा पर रहता है। विदर्भ जैसे पिछड़े क्षेत्र आप जैसे राजनीतिज्ञों के मेहरबानी से ही इतने पिछड़े हुए हैं।
- वैसे भी मोदी और आप की राजनीति में समानतायें ज़्यादा हैं, असमानतायें कम। आप दोनों की राजनीति का स्वर अल्पसंख्यक समुदायों को आतंकित करने वाला और बहुसंख्यक कट्टरपंथियों को उकसाने वाला रहा है। आप दोनों के सत्ता में आने पर इस देश की एकता को कमज़ोर ही होना है। कायदे से आपको मोदी के पाले में होना चाहिये। हमें अब भी लगता है कि चुनाव आने तक ऐसा हो ही जायेगा।
- मोदी ने तो मानो राजनीति ही आपके चाचा बाल ठाकरे और उस समय की आपकी श्री पार्टी 'शिवसेना' से सीखी। आप लोग मुंबई से मलियाली और तमिलों को लूट-मार कर खदेड़ते थे; बाद में यही दुषकृत्य आपने बिहारियों के साथ करना शुरु किया। 'मराठी मानुस' के नारे से लोग़ों को भड़काकर आप चाचा-भतीजे ने खूब वोट बटोरे हैं। मोदी ने भी यही काम गुजरात में मुसलमानों के संहार व उजाड़ के माध्यम से किया और भरपूर चुनावी फ़सल काटी।
- जब से मोदी ने स्वयं को भाजपा के प्रधानमंत्री पद के दावेदार के रुप में पेश करना शुरु किया है, कुछ हद तक उनकी भाषा तो संयत हुई है। पर आप तो अभी भी गुंडे- मवालियों की भाषा में ही बात करते हैं। 'आप' पार्टी की मुंबई में बढती लोकप्रियता ने आपको निश्चय ही बेहद उत्तेजित किया होगा। तभी स्वयं को आपने 'आप' का बाप बताया है। जबकि हकीकत में आप उन शिवसैनिकों के माई-बाप हैं जो मुंबई की गली-गली में नागरिकों से रंगदारी वसूलते हैं।